This is the subtitle of PDF, Use long text here.

डा. सुजाता गुप्ता
हिंदी विभाग
इंटरमीडिएट१२

शमशेर बहादुर सिंह

1

* आत्मा की अभिव्यक्ति और उसकी पवित्रता ।
* शमशेर की प्रायः सभी कविताएँ एकालाप हैं — आंतरिक एकालाप ।
* शब्द कहाँ हैं ? राग । यह एक नए ढंग का 'लिरिक' है । एकालाप में संलाप और संलाप में एकालाप ।
* उनकी कविताएँ गद्य हैं । बोलचाल की लय का गद्य । रुक-रुककर आगे बढ़ता हुआ । विलंबित । विपर्यस्त । फिर भी कविता । अत्यधिक सुगठित । हर तरह के झोल को हटाकर, फालतू शब्दों को निकालकर जतन से रचा हुआ । कविता को गद्य की तरह सुलिखित होना चाहिए । एकदम ठोस । लेकिन ठस नहीं । कहीं-कहीं शोखी भी । शमशेरियत लिए हुए ।
* स्वर में दर्द है । अजीब है यह दर्द । प्रेम की पीड़ा, अकेलेपन का अवसाद, लेकिन कुछ और भी । जीवन की विडम्बना । जगत की विषमता । रोमांटिक विषाद से अलग । रुलाता नहीं, सोच में डाल देता है । सोचें और उदास हो जाएँ ।
* मानवीय करुणा और ट्रैजिक बोध ।
* मृत्यु से मुठभेड़ भी है, प्रेम की तीव्र अनुभूति के क्षण में भी साक्षात् उपस्थिति । कीट्स की कविताओं की तरह प्रेम और मृत्यु । आजू-बाजू । साथ-साथ ।
* शमशेर की कार्यशाला । विशाल चित्रशाला है । रंगों का महोत्सव ।
* इस चित्रशाला में रंगों की घुलावट है, रंगों की लीला है । रंगों का ऐसा महोत्सव हिन्दी कविता में दुर्लभ है । कवि सचमुच चौंधिया देता है ।

This is the subtitle of PDF, Use long text here.

2. झोल को हटाकर, फालतू शब्दों को निकालकर जतन से रचा हुआ। कविता को गद्य की तरह सुविसित होना चाहिए। एकदम ठोस। लेकिन ठस नहीं। कहीं-कहीं शोखी भी। शमशेरियत लिए हुए।

* स्वर में दर्द है। अजीब है यह दर्द। प्रेम की पीड़ा, अकेलेपन का अवसाद, लेकिन कुछ और भी। जीवन की विडम्बना। जगत की विषमता। रोमांटिक विषाद से अलग। रुलाता नहीं, सोच में डाल देता है। सोचते और उदास हो जाएँ।

* मानवीय करुणा और ट्रैजिक बोध।

* मृत्यु से मुठभेड़ भी है, प्रेम की तीव्र अनुभूति के क्षण में भी साक्षात् उपस्थिति। कीट्स की कविताओं की तरह प्रेम और मृत्यु। आजू-बाजू। साथ-साथ।

* शमशेर की कार्यशाला। विशाल चित्रशाला है। रंगों का महोत्सव।

* इस चित्रशाला में रंगों की घुलावट है, रंगों की लीला है। रंगों का ऐसा महोत्सव हिन्दी कविता में दुर्लभ है। कवि सचमुच घंघोल देता है।

* ये चित्र सचमुच इंप्रेशनिस्टिक ही नहीं हैं, कुछ 'सुर्रियलिस्ट' भी हैं। कुछ सरल रेखांकन और कुछ पत्थर की तराशी मूर्तियों की तरह। हिन्दी कविता में ऐसी सघन ऐन्द्रिकता दुर्लभ है।

* कलाकृतियाँ भी शमशेर की ~~सघन ऐन्द्रि~~ संवेदनशील ऐन्द्रिय चेतना को उद्बुद्ध करती हैं।

* सौन्दर्यवृत्ति की काव्यात्मक अभिव्यक्ति है। भाषा का

Teacher's Signature

This is the subtitle of PDF, Use long text here.

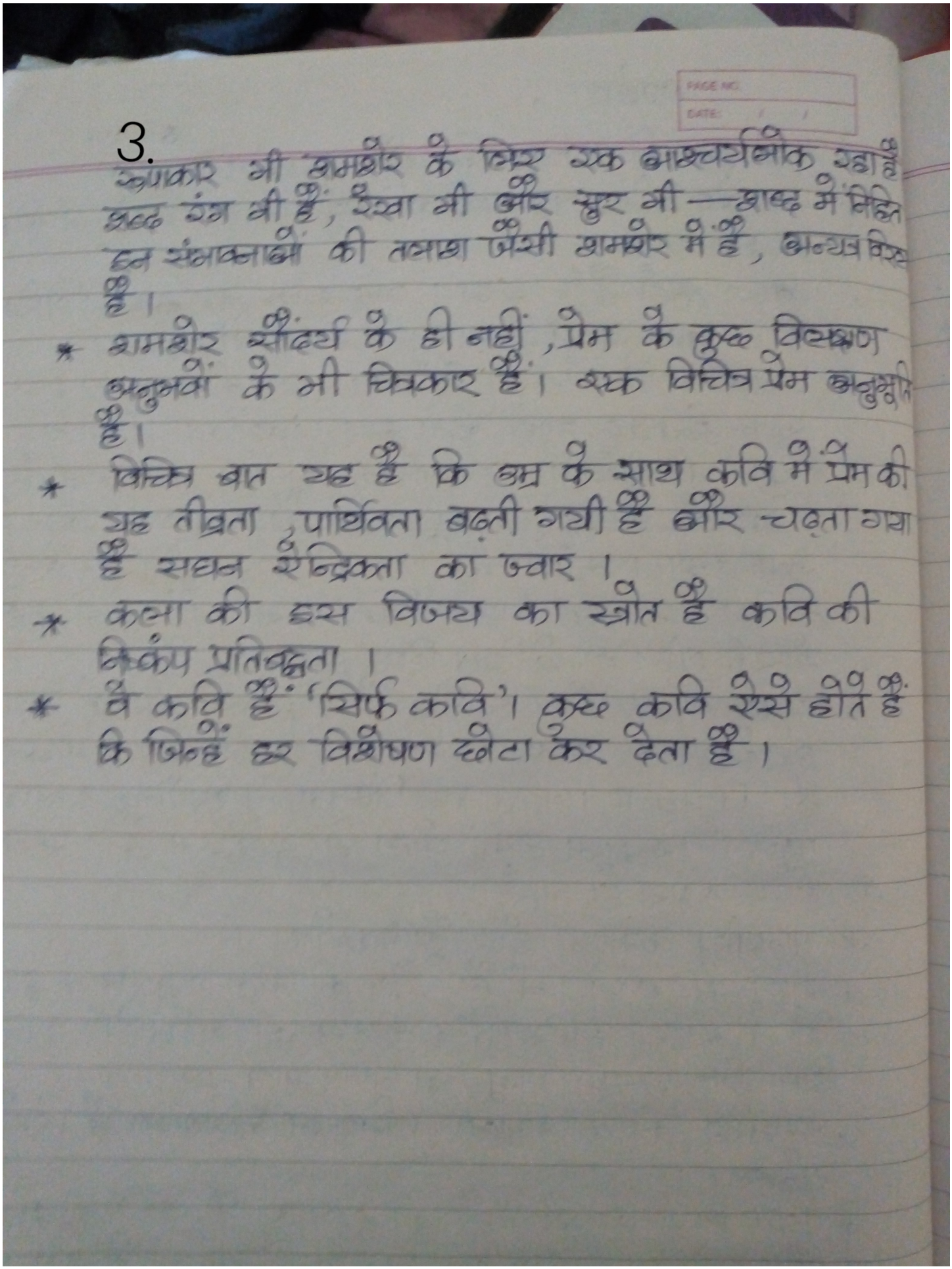

3. रूपाकार भी शमशेर के लिए एक आश्चर्यलोक रहा है। शब्द रंग भी है, रेखा भी और सुर भी — शब्द में निहित इन संभावनाओं की तलाश जैसी शमशेर में है, अन्यत्र विरल है।

* शमशेर सौंदर्य के ही नहीं, प्रेम के कुछ विलक्षण अनुभवों के भी चित्रकार हैं। एक विचित्र प्रेम अनुभूति है।
* विचित्र बात यह है कि उम्र के साथ कवि में प्रेम की यह तीव्रता, पार्थिवता बढ़ती गयी है और चढ़ता गया है सघन ऐन्द्रिकता का ज्वार।
* कला की इस विजय का स्रोत है कवि की निष्कंप प्रतिबद्धता।
* वे कवि हैं 'सिर्फ कवि'। कुछ कवि ऐसे होते हैं कि जिन्हें हर विशेषण छोटा कर देता है।